जौनसार- बावर का सांस्कृतिक परिदृश्य: एक अध्ययन

डॉ० राजपाल सिंह चौहान
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
राजकीय महाविद्यालय वेदीखाल, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सारांश- यह शोध पत्र जौनसारी-बाबरी संस्कृति पर आधारित है। जिसमे जौनसारी-बावरी संस्कृति के समस्त उदात्त तत्वों को समावेश किया है। इसमें जौनसारी संस्कृति का स्वरूप, भौगोलिक एवं सामाजिक परिवेश व लोक संस्कृति के विविध तत्त्वों को समाहित किया गया है। इसमें जौनसारी संस्कृति के सम्पूर्ण व्यवस्था है जिसमें समस्त ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिक सिद्धान्त विविध प्रथाएं एवं अन्य योजनाएं सम्मिलित है। इस शोध पत्र में जौनसारी -बावरी संस्कृति विविध तत्वों क्रमश: भाषा-बोली, रीति-रिवाज तथा पौराणिक परम्परा, खान-पान, रहन-सहन, मेले त्यौहार एवं महोत्सव, उत्सव, सामाजिक परम्पराएं एवं धार्मिक विश्वासों को समाहित किया गया। यह शोध सन् 2000 से 2002 के मध्य किया गया |

प्रस्तावना

संस्कृति और सभ्यता इस युग के दो चर्चित विषय है। अवस्थाओं और मान्यताओं को संस्कृति और उसके अनुरूप व्यवहार तथा आचरण करने को सभ्यता कहते हैं। संसार में जितनी जातियाँ हैं, उनकी उतनी ही संस्कृतियां भी हैं। यदि भारतीय जीवन दर्शन का अध्ययन करें तो मानवीय संस्कृति केवल एक हो सकती है दो नहीं। संस्कृति को यथार्थ स्वरूप देने के लिए अन्ततः धर्म और दर्शन की शरण में जाना ही पड़ेगा।
जौनसारी संस्कृति पर विचार करने से पूर्व हमें भारतीय संस्कृति पर प्रकाश डालना अत्यंत वांछनीय है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्धशाली संस्कृति और सभ्यता है इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है जीने की कला है। विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र हो संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है अन्य देखों की संस्कृतियाँ तो समय के साथ साथ नष्ट होती रही है। परन्तु भारतीय संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर है।

भारतीय संस्कृति में मानव धर्म को अत्यंत व्यापक तथा समस्त मानव मात्र के लिए अत्यन्त कल्याणकारी माना गया है। मानव धर्म मनुष्य में ऐसे भाव और विचार जागृत करता है, जिन पर आचरण करने से मनुष्य और समाज स्थायी रूप से सुख और शान्ति का अमृत घूँट पी सकता है। भारतीय संस्कृति में जिस उदात्त तत्त्वों का समावेश है, उनमें तत्त्व ज्ञान के वे मूल सिद्धान्त रखें गये है, जिसे जीवन में ढालने से मनुष्य सर्वांगीण विकास हो सकता है।

संस्कृति शब्द का अर्थ है सफाई, स्वच्छता, शुद्धि या सुधार। जो व्यक्ति सही अर्थों में शुद्ध है, जिसका जीवन परिष्कृत है वही सभ्य और सुसंस्कृत कहा जायेगा जब हम भारतीय संस्कृति शब्द का प्रयोग करते हैं, तो हमारा तात्पर्य उन मूलभूत विचारों से होता है जिन पर आचरण करने से मानव जीवन में अच्छे संस्कार उत्पन हो सकते हैं, और जीवन शुद्ध परिष्कृत बन सकता है। (भारतीय संस्कृति का स्वरुप पृष्ठ संख्या ३१. डॉ० सुनीता तिवारी)

संस्कृति की परिभाषाएं अनेक है और विद्वानों ने भिन्न -भिन्न रूपों में इसकी व्याख्याएं की है। यह विकास का एक रूप नहीं है, विभिन्न रूपों की ऐसी समन्वयात्मक समस्ति है जिसमें एकरूप स्वतः पूर्ण होकर अपनी सार्थकता के लिए दूसरे के सापेक्ष है। किसी मनुष्य समूह के साहित्य कला आदि में संचित ज्ञान और भाव का ऐश्वर्य ही उसकी संस्कृति का परिचायक नहीं है, उस समूह के प्रत्येक व्यक्ति का साधारण शिष्टाचार भी उसका परिचय देने में समर्थ है क्योंकि संस्कृति जीवन के बाह्य और आन्तरिक संस्कार का क्रम ही तो है और इस दृष्टि से उसे जीवन को सब ओर से स्पर्श करना होगा।संस्कृति जीवन के सामाजिक व्यवहारों को निश्चित करती है और उनकी संस्थाओं चलाती है वह उनके साहित्य और उनकी भाषा को बनाती है वह उनके जीवन के आदर्श, उनके जीवन के सिद्धान्तों को प्रकाश देती है। वह समाज के भावात्मक और आदर्श व विचारों के बीच निहित होती है जो समाज और व्यक्ति को महत्व देती है। संस्कृति साध्य नहीं साधक है। किसी भी व्यक्ति का सांस्कृतिक महत्व इस बात पर निर्भर करता है कि उसने अपने अहम से अपने को कितना बंधन मुक्त कर लिया है वह व्यक्ति भी संस्कृत है। जो अपनी आत्मा को साफ करके दूसरे के उपकार के लिए उसे नम्र और विनीत

बनाता है। जितना व्यक्ति मन, कर्म वचन से दूसरों के प्रति उपकार की भावना और विचारों को प्रधानता देगा, उसी अनुपात में समाज में उसका सांस्कृतिक महत्व बढ़ेगा। सामाजिक सद्गुण ही जिनमें दूसरों के प्रति अपने कर्तव्य पालन या परोपकार की भावना प्रमुख है व व्यक्ति की संस्कृति को प्रोढ़ बनती है

निष्काम भाव से मनुष्य पूर्णता के लिए सतत् प्रयत्न ही संस्कृति है। मनुष्य के अच्छे कार्य, तथा विचार - व्यवहार सभ्यता के द्योतक है। ये ही सामूहिक रूप से किसी देश या जाति की संस्कृति है। इस प्रकार संस्कृति सभ्यता का परिणाम है और दूसरी ओर सभ्यता प्रत्येक देश समाज की संस्कृति का व्यवहारिक रूप है। संस्कृति के चार पहलू क्रमश: शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक है। तत्वदर्शी ऋषियों में जिन सूक्ष्म आधारों पर सुख शान्ति प्राप्ति की मार्ग दिखाया उसे संस्कृति के अन्तर्गत रखा जाता है (भारतीय संस्कृति का स्वरूप पृष्ठ स० 32 डॉ० सुनीता तिवारी)

विषय का महत्त्व

"जौनसारी- बावरी लोक संस्कृति हिमालयी लोक संस्कृति का हिमकिरीट है, जो अपने नैसर्गिक, भौगोलिक वैविध्य के बीच अपनी मौलिकता एवं पहचान को अक्षुण बनाये रखने में सक्षम सिद्ध हुई है। जौनसारी संस्कृति विशुद्ध पहाड़ी जनजातिय संस्कृति है। जिसकी अपनी पृथक भाषा (बोली) रहन-सहन, खानपान रीति रिवाज, सामाजिक मान्यताएं एवं धार्मिक विश्वास है। सामाजिक जीवन में जौनसारी- बावरी लोकसंस्कृति के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। यह संस्कृति विभिन्न विशिष्टताएँ से ओत-प्रोत है। संसार का प्रत्येक साहित्य और साहित्य से सम्बन्धित भाषा बोली प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लोक संस्कृति को प्रभावित करती है।

जौनसारी बावरी लोक संस्कृति पर मौखिक साहित्य तो प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है किन्तु लिखित साहित्य अल्प मात्रा में ही उपलब्ध है अब तक के लेखको एवं शोधकर्ताओं ने इस अनूठी संस्कृति पर अपनी लेखनी प्रवाह अत्यंत गौण रूप में दिया है, और कुछ लेखको एवं शोधकताओं ने तो अमर्यादित होकर यहाँ संस्कृति को दूषित करने के का अविवेकपूर्ण कार्य भी किया है उन्होंने तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करने का कुकृत्य किया है। फलस्वरूप शिक्षा रोजगार एवं उचित स्वास्थ्य सेवा के लिए यहाँ का जनमानस शहरों की ओर पलायन कर रहा है जिसके परिणास्वरूप यह संस्कृति विलुप्ति की ओर अग्रसर हो रही है। इस संस्कृति को बचाये रखने के लिए इसका सम्बर्द्धन, लिपिबद्ध करना, एवं संरक्षण प्रदान करना अत्यंन्त आवश्यक है।

'भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है यहाँ पर अनेकानेक लोक संस्कृतियां हैं. लोक संस्कृति के इन नाना स्वरूपों में उत्तराखण्ड अंचल विशेष में अपनी समृद्धशाली और मौलिक संस्कृति की अनमोल विरासत के लिए जौनसारी- बावरी लोक संस्कृति सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। आतिथि सत्कार इस संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। महाभारत की समकालीन जौनसारी- बावरी संस्कृति अपनी परम्परागत संस्कृति एवं सभ्यता को वर्तमान समय तक भी संजोये हुए हैं। यहाँ के लोग स्वयं को पाण्डव के वंशज मानते है। इसलिए आज भी समाज मे बहुपति विवाह का प्रचलन सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। लेकिन समय की करवट के साथ एवं आधुनिकता की पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से प्रभावित होकर संस्कृति का यह तत्व बुद्धपि प्रभा धीरे-धीरे समाप्ति के कगार पर है।

बावरी जौनसार-बावर ३ परिवेश में ऐतिहासि तत्थों और पौराणिक मान्यताओं को उद्घाटित करने की परम आवश्यकता है। इतिहास साक्षी हैकि यह दुर्गम पहाड़ी जनजातिय क्षेत्र आदि काल से राष्ट्र की मुख्य धारा से सर्वकालिक संबंध जोड़कर सदैव कसौटी पर खरा उतरी है। कुछ समाज शास्त्रियों, मानव विज्ञान शास्त्रीयों के अनुभवों एवं शोधकर्ताओं ने इस क्षेत्र में प्रचलित बहुपति विवाह एवं बहुपत्नी विवाह को आवश्यकता से अधिक उछालने का अतिश्योक्तिपूर्ण प्रयास किया। तथा इस संस्कृति के गुणदोष एवं ज्ञान के अभाव एवं भौगोलिक ज्ञान के अभाव में सामाजिक बनावट का विश्लेषण किये बिना अपने लेखनी को अमर्यादित प्रवाह दिया है।

अतः ऐसी अनोखी संस्कृति को बचाये रखने के लिए उसके लोक साहित्य की लोक कलाओं एवं संस्कृति तथा भाषा एक लिपि को लिपिबद्ध करके पुस्तकों एवं शोध पत्रों के माध्यम से विकसित करने की आवश्यकता है ताकि इसे भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सके। इस विशिष्ठ संस्कृति का संबर्द्धन सरक्षण अति-आवश्यक है।

उद्देश्य - (1) जौनसारी संस्कृति को लिपिबद्ध करना ।

2 जौनसारी-बावरी संस्कृति का सम्बर्द्धन करना।

3 जौनसारी - बावरी संस्कृति को संरक्षित करना।

4 जौनसारी - बावरी संस्कृति को विकसित करना ।

5 जौनसारी- बावरी लोक संस्कृति को अन्य संस्कृतियों के साथ जोड़ना।

6 जौनसारी-बावरी लोक संस्कृति को जीवित रखना अर्थात विलुप्तिकरण से बचाना

संस्कृति का अर्थ है, मनुष्य का भीतरी विकास व्यक्ति के निजी चरित्र और दूसरों के साथ किये जाने वाले व्यवहार तथा दूसरों के व्यवहार को ठीक समझ सकने की योग्यता संस्कृति की देन है। अंग्रेजी में संस्कृति का अर्थ बोधक शब्द है, कल्चर, जिसका तात्पर्य है- सभ्यता, रहन-सहन एवं खान-पान, सोचने-विचार करने का तरीका। अपने नाम धन रूप, परिवार क्षेत्र भाषा आदि की तरह अपने रहन-सहन, रीति-रिवाज, व्यवहार व जीवन यापन के लिए सर्वसम्मत जीवन पद्धति का निर्माण करना और उसे उन्हीं के अनुरूप संस्कार से संवार कर उसका विकास करना ही संस्कृति है।

इस अर्थ में जौनसार-बावर की लोक संस्कृति अपना स्वरूप निर्धारण करने में सक्षम है। वहाँ का भौगोलिक एवं सामाजिक परिवेश लोक संस्कृति के स्वरूप के निर्धारक मानक हैं। इतिहास सम्मत मत के अनुसार जौनसार-बावर के लोग आर्य जाति के वंशज है, जो भारत के मूल निवासी होने के साथ-साथ यहां अपनी मौलिक सांस्कृतिक पहचान व सामाजिक मान्यताओं के लिए विख्यात है।

जौनसारी लोक संस्कृति हिमालयी लोक संस्कृति का हिमकिरीट है, जो अपने नैसर्गिक, भौगोलिक, वैविध्य के बीच भी अपनी मौलिकता व पहचान को अक्षुण बनाये रखने में सक्षम सिद्ध हुई है। यद्यपि अब दुनिया में कोई नस्ल ऐसी नहीं बची है. जोपूरी तरह रक्तशुद्धि का दावा कर सके। जातियों के बीच प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप में बेटी व्यवहार चलते रहे और नस्लों को मूल रूप में आश्चर्यजनक परिवर्तन होते रहते हैं। फिर भी जौनसारी लोग स्वभाव से ही अपनी मूलकृति को यथावत रखने में सफल हुए हैं, उनके बीज-वंश अन्य जातियों की अपेक्षा कम परिवर्तन हुए हैं। सभ्यता के विकास के साथ-साथ समाजों के आपसी आदान-प्रदान का भी संस्कृति पर प्रभाव पड़ा है। परिवर्तन के दौर में भी अपनी श्रेष्ठता और मौलिकता को बचाए रखने का प्रमाण जौनसार बावर की संस्कृति में विद्यमान है।

यहां आज भी प्रायः कृषि, पशुपालन, चिकित्सा, पूजा-पाठ शिल्प उद्योग के साथ-साथ जीवन यापन की पद्धति विशुद्ध जौनसारी है। परिवर्तन सर्वथा प्रगति का सूचक होता है। सौन्दर्योपासना संस्कृति का दिव्यगुण हैं। कुल देवता महासू की उपासना और उसी को अपनी जीवन का सर्वस्व मानने वाले जौनसारी स्वभाव से ही सत्य और धर्म के अनुसार चलने के आदी हैं। उनके स्वभाव में भोलापन, निश्छलता और उनकी शान्त मुद्रा सौन्दर्योपासना की परिचायक हैं। संस्कृति संरचना की जननी है। इसलिए जौनसार-बावर के लोगों का संस्कार संस्कृति ने अपनी तूलिका से संवार कर संस्कार सम्पन्न कर दिया है। संस्कार सम्पन्न संस्कृति की वह कृति कार्य पद्धति है जो यहां के हर व्यक्ति के साँस की लय की तरह प्रवाहमान हैं। धर्म और सभ्यता के समन्वय में यहां के लोगों को आत्म साक्षात्कार के लिए प्रस्तुत करती हैं

जौनसार-बावर संस्कृति विशुद्ध पहाड़ी संस्कृति है, जिस प्रकार हिमालय की शुद्ध हवा नदी, झील, झरनों का शुद्ध जल, शुद्ध घी, अन्न व दूसरी वस्तुएँ अपनी पवित्रता के लिए विख्यात है। जौनसारी संस्कृति भी अपनी पवित्रता के लिए एक अनूठा उदाहरण है। इसलिए किसी भी क्षेत्र की संस्कृति से तात्पर्य है कि उस क्षेत्र के निवासियों को रहन-सहन, भाषा बोली, रीति-रिवाज परम्पराएँ, खानपान एवं सामाजिक मान्यताएँ आदि।

संस्कृति वह जटिल सम्पूर्ण व्यवस्था है, जिसमें समस्त ज्ञान, विश्वास कला, नैतिकता के सिद्धान्त, विधि विधान, प्रथाएँ एवं अन्य समस्त योजनाएँ सम्मिलित हैं, जिन्हें व्यक्ति समाज का सदस्य का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है। संस्कृति को सामाजिक विरासत माना जाता है। संस्कृति पैतृकता से प्राप्त नहीं होती, अपितु सीखा हुआ व्यवहार है, जो मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते ही सीख लेता है। इसलिए समाज को संस्कृति का दर्पण भी कहा जाता है। संस्कृतिपूर्ण सामाजिक परम्परा है। जौनसार-बावर की संस्कृति का वर्गीकरण आठ भागों में किया जा सकता है :-

जौनसारी संस्कृति का वर्गीकरण

१. भाषा (बोली)

२. संस्कार

३. रीति-रिवाज तथा पौराणिक परम्पराएँ

४. सामाजिक मान्यता

५. धार्मिक मान्यताएं

६. खान-पान

७. रहन-सहन

८. वेश-भूषा

भाषा एवं बोली: जौनसार-बावर की अपनी एक भाषा (बोली) है, जिसे स्थानीय भाषा में जौनसारी एंव बावरी कहा जाता है। यद्यपि जौनसार-बावर की अपनी एक प्राचीन लिपि है जो कतिपय कारणों से व्यवहार में नहीं आ पायी। ब्राह्मणों एवं पॉबचो के ग्रन्थों में ही कैद होकर रह गयी। यदि इस लिपि का विकास एंव प्रचलन बढ़ाया जाता तो वर्तनी एवं उच्चारण के समस्या का हल मिल चुका होता और जौनसारी भाषा का सही उच्चारण के साथ प्रचार एवं प्रसार हुआ होता। जौनसार के लोगों की भाषा जौनसारी तथा बावर के लोगों की भाषा बावरी कहलाती है, लेकिन आजकल व्यवहार में प्रयुक्त लिपि देवनागरी ही है।

सामाजिक जीवन में लोक संस्कृति के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता है। संसार का प्रत्येक साहित्य और साहित्य से सम्बन्धित भाषा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लोक संस्कृति में प्रभावित है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही जब मनुष्य की विकास यात्रा का श्री गणेश हुआ भाषा उसका मुख्य अवयव एवं सर्वसुलभ माध्यम रहा है, चूँकि अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए मनुष्य को भाषाश्रित होना ही पड़ता है। भाषा के बिना उसकी व समाज की विकास गाथा ने केवल अकथ रह जाती है। अपितु यह गूँगापन उसे अपनी बात समझाने एवं समझने तथा दूसरे से कहने की बात ग्रहण करने में एक बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न कर देता है।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ, बोलियाँ बोली जाती हैं। बोली भाषा के इन विविध नानस्वरूपों में उत्तराखण्ड के अंचल विशेष में अपनी समृद्धधार्मिक पारम्परिक पहचान के लिये प्रसिद्ध है। महाभारत काल से जुड़ा यह क्षेत्र पांडवों की कर्मभूमि रहा है। यहाँ के लोग स्वयं को पांडवों का वंशज मानते हैं। महासू देवता यहाँ का आराध्य देव है तथा शैव व वैष्णव मतों का यद्यपि समान रूप से आदर होता है, फिर भी शैव मत का प्रबल प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है।

जौनसार-बावर के परिवेश में ऐतिहासिक तथ्यों और पौराणिक मान्यताओं को उद्घाटित करने की आवश्यकता है। इतिहास साक्षी है कि यह दुर्गम पिछड़ा पहाड़ी क्षेत्र आदि काल से राष्ट्र की मुख्यधारा से सर्वकालिक सम्बन्ध जोड़कर सदैव कसौटी पर खरा उतरा है। कुछ समाज तथा मानव शास्त्र के अनुभवों व शोधकर्ताओं ने इस क्षेत्र में प्रचलित बहुपति व बहुपत्नी प्रथाओं को आवश्यकता से अधिक उछालने का अतिश्योक्तिपूर्ण प्रयास किया तथा इसके गुण-दोषों के ज्ञान के भौगोलिक ज्ञान के अभाव में तथा आर्थिक सामाजिक बनावट का विश्लेषण किये बिना किसी भी प्रथा की वर्णनात्मकता यहाँ की जीवनशैली के प्रति न्यायपूर्ण सिद्ध नहीं हो सकती। इस विषय में गहन अध्ययन करने के पश्चात् विश्लेषण करना आवश्यक है। यह देवात्मा हिमालय की गोद में बसा, प्राकृतिक सम्पदा, प्राचीन संस्कृति व विशिष्ट सामाजिक रचना को अपनी अन्दर समेटे हुए अपना यह सुदूर क्षेत्र जौनसार-बावर है, जिसमें कि अभी तक के शोध कार्य अपूर्ण ही नहीं तथापि सत्यता व मौलिकता से दूर है। इसी कारणवश "लेखक" यहाँ का वाशिंदा (मूल निवासी) होने का गौरवान्वित होकर तथ्यों को जन समुदाय के समक्ष वर्णन करने का प्रयास कर रहा है।

रीति-रिवाज तथा पौराणिक परम्परायें

किसी क्षेत्र या प्रदेश की परम्पराओं का अभिप्राय, उस क्षेत्र की संस्कृति, भाषा, वेश-भूषा, रीति-रिवाज तथा विवाह संस्कारों की पद्धति आदि से होता है। जौनसार-बावर के लोग हिन्दू धर्म के मतावलम्बी हैं, तथापि मूल रूप से जनजाति होने के कारण इनके अपने रीति-रिवाज, भाषा, देवी-देवता हैं। हिमाचल प्रदेश से जुड़ा क्षेत्र सदियों से अपनी परम्परागत सभ्यता एवं संस्कृति को संजोये हुए जीवन यापन करता चला आ रहा है। महाभारत की समकालीन संस्कृति एवं सभ्यता यहाँ मुगलकाल से अपनी परम्परागत सभ्यता एवं संस्कृति को संजोये हुए जीवन यापन करता चला आ रहा है। महाभारत की समकालीन संस्कृति एंव सभ्यता यहाँ मुगलकाल से पूर्व ही मौजूद थी। नागाधिराज हिमालय की उपत्यका में रचा-बसा जौनसार-बावर अपने नैसर्गिक सौन्दर्य, मौलिक संस्कृति और विशिष्ट सामाजिक,

खान-पान एवं रहन-सहन :- आर्थिक दृष्टि से प्रत्येक जनसाधारण समान तथा स्वावलम्बी है। भरपेट खाने-पीने के लिए रोजी-रोटी सभी कमा लेते हैं। समाज में विषमता कम ही दृष्टिगोचर होती है। सभी प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग करते हैं। खून-पसीने की कमाई से लोग सन्तुष्ट रहते हैं। आर्थिक स्रोत मात्र कृषि एवं पुशपालन ही है। खेतिहार जीवनचर्या एवं कष्टमय जीवन यापन करते हुए सुखी एवं साधारण जीवन यापन करते हैं। वसुधैव कुटुम्बकम्' की संस्कृति की झलक यहाँ के जीवन में सर्वत्रकी दृष्टिगोचर होती है।

रहन-सहन यहाँ के संसाधनों पर पूर्णतः आश्रित है। स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति इन्हीं साधनों से होती । यहाँ का खान-पान साधारण है, खाद्य पदार्थों में मुख्यतः गेहूँ मक्का, कौदा आदि की रोटी एवं चावल (जिसे स्थानीय बोली में मात कहा जाता है), कावणी, सतु, लेमडो, छँडी, जगोरा आदि भोज्य पदार्थ ग्रहण करते हैं, तथा साग-सब्जियों में मटर, कद्दू काखड़ा, लौकी, करेला, तोरी बैंगन, हरी सब्जियों में मूली, पालक, गाजर आलू, प्याज भिण्डी आदि एवं दालों में प्रमुखतः राजमा यह तीन प्रकार की होती है। लाल, सफेद तथा काली, सोयाबीन, बरट, कुलथी, मास, मसूर मूंग, सूटें आदि प्रमुख है

इस प्रकार जौनसार-बावर में शाकाहारी एंव मांसाहारी दोनों प्रकार के खाद्य पदार्थों का प्रचलन है मूलरूप से यहाँ के लोग सादा भोजन दाल, सब्जी रोटी चावल का उपभोग करते हैं। यहाँ का रहन-सहन काफी सादा है। जौनसार-बावर के लोग ईमानदार एंव परिश्रमी होते हैं।

मेले त्यौहार एवं महोत्सव:

देवभूमि जौनसार-बावर में आदि काल से ही एक जैसे धार्मिक त्यौहार, मेलों को मनाने की प्रथा आज भी सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। आधुनिककाल में जैसे-जैसे यहाँ शिक्षा का प्रसार हुआ वैसे-वैसे महोत्सव मनाने की परम्परा का भी प्रादुभाव हुआ है। महोत्सव एक ऐसा प्रयास है, जिसमें हम अपनी पौराणिकता लुप्त होती जा रही है। संस्कृति की पुर्नजीवित किया जा सकता है, तथा सामाजिक एंव सांस्कृतिक जनजागरण का आभास होता है। सम्पूर्ण जौनसार-बावर में मेले एंव त्यौहारों को भिन्न-भिन्न गाँवों में भिन्न-भिन्न रूपों में मनाया जाता है, लेकिन सामूहिक रूप से मनाये जाने वाले मेले एंव त्यौहारों में प्रत्येक जाति एंव वर्ग के नर-नारी गाँव के पंचायती आँगन या देवता की प्रांगण में ढोल दमाउणी एवं रणसिगें तथा अन्य वाद्य यंत्रों के स्वर एकजुट होकर सामूहिक नृत्य एवं गीत गाकर जौनसारी संस्कृति की एकता के परिचायक हैं। देवभूमि का श्रेय प्राप्त जौनसार-बावर प्राचीन धार्मिकत्यौहार व मेलों के लिए सम्मिलित है। यहाँ के महोत्सव एक ऐसा प्रयास है, जिससे सामाजिक व सांस्कृतिक जनजागरण की मूलक का आभास होता है। यह परगने के सभी भागों से बिल्कुल भिन्न अपनी पहचान व अनूठी संस्कृति का जामा पहने हुए हैं। त्यौहार व मेले भिन्न हैं, सामूहिक रूप में मनाये जाने वाले इन मेलों, त्यौहारों में जहाँ हर जाति के नर-नारी गाँव के पंचायती आँगन में ढोल, दमाके व रणसिंगें वाद्य यंत्रों के स्वर एकजुट होकर सामूहिक नृत्य एवं गीत गाते हैं, कहीं एक-दूसरे को अपने घरों में ले जाकर भोजन कराते हैं और एकता व भाई चारे का प्रदर्शन करते हैं।

जौनसार-बावर के देवभूमि में अनेक त्यौहार एवं मेलों को मनाने की प्रथाएँ हैं, लेकिन सामूहिक रूप से मनाये जाने वाले त्यौहार निम्नलिखित हैं :-

(1) बिस्सू

(2) दिवाली (देयाई)

(3) जागड़ा

(4) नुणाई

(5) पाँचों के मेले

(6) माघ त्यौहार

(7) शहीद केसरी चंद का मेला

(8) मअण आदि ।

1. बिस्सू- बैसाखी से चार दिन तक बिस्सू का त्यौहार मनाया जाता है। 13 अप्रैल से 16 अप्रैल तक के इस पर्व में सब लोग अपने मकानों व गौशालाओं की पुताई सफेद मिट्टी (कमेडा) से कर स्वागत करते हैं। पहले दिन सुबह

पौराणिक हथियारों (तलवारों, ढांगरा, धनुष-बाण) को साफ कर तैयार करते हैं। पुरूष आँगन में एकत्र बुरांस के फूलों को जंगल से लाकर लकड़ियों के मध्य सजाकर देवी-देवताओं को गाते बजाते भेट करते हैं, फिर कुछ फलों को साथ लाकर अपने घरों में लगाते हैं। स्त्री-पुरूष आँगन में अलग-अलग देवांगनाओं की कृतियों का गान गाकर व्याख्यान करते हैं। घरों में खास चावल के व्यंजन बनाये जाते हैं। खासकर (कचोडियाँ) व शाकूलिया आदि मुख्य होते हैं। यह त्यौहार जौनसार-बावर के प्रत्येक गाँव व खेतों में मनाया जाता है। इसमें लोक नृत्यों व गीतों के अतिरिक्त धनुष-बाण (ठोउडा) का प्रदर्शन, मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहता है। कौरव व पांडवों की परम्पराओं के आधार पर अस्त्र-शस्त्र व तीर कमान को तैयार करना तथा अभ्यास करना योद्धाओं की प्रतिष्ठा को प्रमुखता देना होता है।

2. दिवाली (दियाई)- इस क्षेत्र में दिवाली मुख्य त्यौहारों के रूप में मनाई जाती है। यह दिवाली देश में मनाई जाने वाली दिवाली से ठीक एक माह बाद मनाई जाती है। इसका पौराणिक मत के अनुसार लोगों का मत है कि यहाँ अयोध्या से दूर होने के कारण भगवान रामचन्द्र के राज्याभिषेक का समाचार एक माह बाद पहुँचा, परन्तु इस त्यौहार के मनाने का कारण खास कर फसल की कटाई और बुआई जोकि कार्तिक माह में होती है और लोग कृषि के कार्य में व्यस्त रहते हैं, इसलिए एक माह बाद मंगसीर माह में मनाते हैं।

आमावस्या की रात्रि को गाँव के सभी नर-नारी आँगन में आकर "होला" लकड़ी का पुंज जला कर पांडवों तथा महासू देवता के गीत गाते हैं। पुरुष लोग "होला" लेकर निकट किसी खेत में जाकर गायलों (लोकल गान बखान) करते हैं। दूसरे दिन गाँव के पुरूष गेहूँ जौ की उगाई गई हरियाली लेकर आँगन में उतरते हैं और सर्वप्रथम कुल देवता के मन्दिर में चढ़ाते हैं। इसके बाद गाँव के मुखिया स्याणा के कान पर हरियाली लगाकर फिर हर नर-नारी को हरियाली अर्पित करते हैं, और आँगन में हरियाली पर गीत गाते हैं। इस दिवस को "भिरूढ़ी' कहते हैं, प्रातः आपसी वैमनस्य को भुलाकर अखरोट तथा चिवड़े (चावल उबले व कुटे हुए) के साथ गले से गले मिलकर आदान-प्रदान होता है। आपसी मतभेद भुला दिये जाते हैं। सात दिनों के इस पर्व के अन्तिम दो दिनों में हिरण, हाथी बनाकर नचाया जाता है। अच्छे-अच्छे व्यंजन बनाकर एक दूसरों को घरों में बुलाकर सम्मान किया जाता है।

गीतों के व्याख्यान से यह भी विदित होता है कि पूर्व कुटुम्ब में दैव्य-सामूसाड़ी "मुनष्य का दूध पीता था, जिससे बच्चे भूखे ही मर जाते थे। इस व्यथा के परिवेश में 'देवलाड़ी' में महासू देवता ने अवतार धारक किया, जिससे दानव का विनाश हुआ तथा खुशी में दिवाली मनाई गई।

3. जागडा- यह मुख्य रूप से क्षेत्र के धार्मिक पर्व श्री महासू देवता की आराधना के लिए मनाया जाता है। भादो के महीने महासू की मूर्ति को स्नान कराया जाता है और बकरे की बलि देकर मांस व भोजन आगंतुकों को खिलाया जाता है। रात्रि जागरण में देवता के लोकगीत गाकर स्तुति करते हैं। वीरता का प्रमाण इस पर्व में खासकर देवस्थल- हनोल (बाबर) में होता है, जहाँ पर गने के हर व्यक्ति गाँव पहुँच कर महासू देवता की स्तुति में टौंस नदी में सुबह स्नान कर देवता डोली (डोरिया) को मन्दिर के अन्दर से बाहर लाने के लिए बल का प्रयोग कर अपनी और खत की प्रतिष्ठा रखने के लिए संघर्ष करता है। यह त्यौहार अपने आप में अनूठा है और हनोल महासू देवता के मन्दिर के अलावा प्रत्येक देवस्थल पर मनाया जाता है। इस उत्सव के परिवेश में सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक सत्र विद्यमान है। हनोल के अतिरिक्त जौनसार में "बिसोई" "खाटवा" गबैला, थैना और लखवाड़ में भी महासू देवता के आगमन दिवस के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है।

4. "नुणाई:" यह पर्व सावन माह में कई गाँव व खेतों के निकट मेले के रूप में मनाया जाता है। क्षेत्र में भेड़ पालन वाले इलाकों में इसकोम विशेष रूप से मनाते हैं। क्षेत्र में भेड़ पालन वाले इलाकों में इसको विशेष रूप से मनाते है। जब बड़े पर्वतों से पाँच महीने के पश्चात भेड़ों को ऊँची- घाटियों एवं पर्वतों से नीचे लाकर ऊन

निकालने का समय आ जाता है तो प्रथा के साथ पाँच माह से बाहर पर्वतों के जंगलों में भेड़ों के साथ कष्ट उठाने वाले चारवाहे घर पहुँचते हैं, तो उनको गाँवों में सम्मान के साथ बारी-बारी से न्योता मिलता है और नाच-गाने के साथ गाँव वाले इन्हें अपने घर में मेहमान बनाकर स्वागत करते हैं, और इसके कुछ ही दिनों बाद नुणाई का मेला लगता है। जहाँ खत के सभी लोग एकत्र होकर गीत व नाच के साथ खुशियाँ मनाते है। सगे-सम्बन्धी आपसी मूल व प्रेम भाव का आदान-प्रदान करते हैं। मीठे आटे की मोटी-मोटी रोटी (रोट) बनाकर मेले में एकत्र कर भेड़ों व चरवाहे के कुशलपूर्वक वापस घरों में आने की खुशी में रम्म के साथ काट कर सबको प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है। शाम को नजदीक गाँव के लोग दूर से आये हुए मेहमानों को अपने घर बुलाकर आदर-सत्कार करते हैं और भेड़ों की ऊनहैं और सामूहित रूप से बकरा काटकर त्यौहार मनाते हैं लाखामण्डल और उद्पाल्टा व कुणागाँव में तो बस साल पूर्व भैंसों की बलि देकर दशमी का त्यौहार मनाया जाता था, परन्तु अब व मात्र मेले के रूप में ही मनाया जाता है।

5. पाँचों के मेले- यह दशहरे के अवसर पर अनिश्चित शुक्ल पक्ष या सप्तमी तिथि को मनाते हैं। इस दिन मेला भी लगता है, अष्टमी को घर के मुखिया व्रत रखतेऔर मौलिक संस्कृति की अनमोल विरासत के लिए प्रसिद्ध हैं, परन्तु अपनी अलग संस्कृति पहचान के लिए सम्पूर्ण राष्ट्र में विख्यात हैं। यह क्षेत्र जौनसार-बावर है।

भाषा हमारे सम्पूर्ण विकास यात्रा को अभिव्यक्ति देती है और जन-जन तक पहुँचती है। देश, जाति की और उस समाज की वास्तविक पहचान उसके साहित्य कला एवं संस्कृति से होती है। उस समाज का क्रमिक विकास साहित्य एवं कला के साथ ही होता है। इन सबके लिए भाषा का आश्रय लेना पड़ता है।

6. माघ त्यौहार- श्रेय में पूरे एक माह तक चलने वाले इस पर्व को पौष माह की संक्राति से दो दिन पूर्व गाँववासी अपने पाले हुए बकरे को पंचायती आँगन में लाते हैं, मानो यह दिखाते हैं कि सबसे मोटा बकरा किसका है? फिर एक-दूसरे का बकरा काटकर घरों में ले जाकर साफ करके रस्सियों में टांग देते हैं और फिर अपने घरों में बुला - बुलाकर सामूहिक भोजन, गान व नृत्य करते हैं। रात को भोजन की व्यवस्था कर नृत्य गाने से खुशियाँ व प्रेम भाव जागृत करते हैं। इस पर्व में प्रत्येक रिश्तेदार के घर बेटी बहिन आदि का हिस्सा लेकर जाते हैं, परन्तु आज के परिवेश में यह पर्व छोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

7. वीर शहीद केसरी चंद का मेला: भला ऐसा कौन जौनसारी होगा कि वीर केसरी के नाम से परिचित न हो, स्वतंत्रता संग्राम में इस युवक ने मात्र 18 वर्ष की आयु में अपने प्राणों की बलि देकर भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इसलिए यह क्षेत्र मात्र, अपने ही क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं, अपितु जब-जब राष्ट्र को केसरी जैसी वीरों की आवश्यकता पड़ी है तब-तब इस क्षेत्र की माटी ने अनेक वीरों को जन्म दिया है. इन्हीं की स्मृति में प्रत्येक वर्ष 3 मई को इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए इस मेले को आयोजन किया जाता है।

8. मौंअण मेला- इस मेले के अवसर पर जौनसार-बावर के भिन्न-भिन्न परगनों के भिन्न-भिन्न नदियों में मनाने की प्रथा है। यह त्यौहार विशेषतः मछली पकड़ने का त्यौहार है। पहले तो इस मेले का आनन्द स्त्रियाँ एवं बालिकाएँ एवं छोटे बच्चे इत्यादि सभी लेते थे, लेकिन वर्तमान में केवल पुरुष वर्ग ही अब इस मेले का आनन्द लेते हैं। पहले इस मेले में लड़ाई-झगड़ों की प्रथा भी प्रचलित थी, लेकिन वर्तमान में शिक्षा के प्रसार से अब इस त्यौहार को बड़े शान्तिपूर्ण एवं मनोरंजन ढंग से मनाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भारतीय संस्कृति क का स्वरूप-पृष्ठ संख्या- 31-32. डॉ० सुनीता तिवारी
2. शोध मंथन जून 2017 - पृष्ठ संख्या-30-33
3. http://anubooks.com Page. Id – 20-30
   Artical No.5 (Sm412)
4. प्राचीन राजनीतिक चिंतन - J.P. Ssuda
5. वैदिक संस्कृति – पं0 गंगा प्रसाद उपाध्याय
6. Recovery of Faith. डॉ० राधाकृष्णन
7. जौनसार बावर. दर्शन - डी०आई० जी० जे०पी०एस० राना
8. जौनसार-बाबर संक्षिप्त परिचय - श्री कृपाराम जोशी (धाणा)
9. किन्नर देश-राहुल सांकृत्यायन (1957) किताब महल इलाहाबाद
10. लोक साहित्य का सामाजिक, सांस्कृतिक अध्ययन -डॉ० श्रीराम शर्मा
    निर्मल पब्लिकेशन कबीर नगर दिल्ली।
11. हिमालय परिचय-गढ़वाल- राहुल सांस्कृकृत्यायन (1557) लॉ जर्नल प्रेस इलाहाबाद
12. गढ़वाली लोक साहित्य संस्कृति झलक : डॉ० गोविन्द चातक

पत्र-पत्रिकाएं

जौनसार मेल समाचार पत्र
गढ़ बैराट समाचार पत्र
जिज्ञासा पत्रिका (डी०ए० वी०पी० जी० कॉलेज देहरादून) 1998
जिज्ञासा पत्रिका (डी०ए० वी०पी० जी० कॉलेज देहरादून) 1999
जिज्ञासा पत्रिका (डी०ए० बी० पी० जी0 कालेज देहराइन) 2000
जिज्ञासा पत्रिका (डी०ए० वी०पी० जी० कॉलेज देहरादून) 2001
जनश्रुतियों के आधार पर
जौनसार -बावर का सांस्कृतिक वृहद अध्ययन - रतन सिंह जौनसारी